देवनागरी

TRADE LINOTYPE MARK

लाइनोटाइप

KEYBOARD OPERATION DEVANAGARI LINOTYPE

KEYBOARD OPERATION
DEVANAGARI LINOTYPE

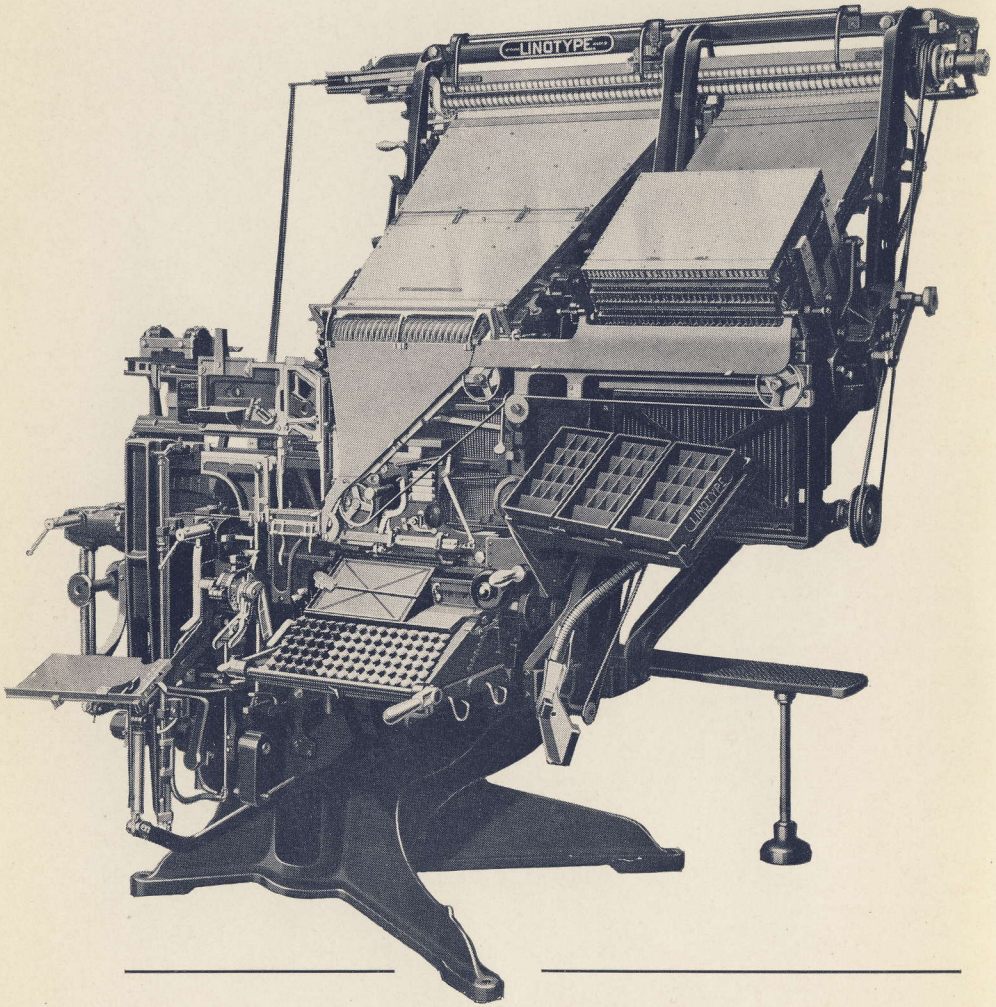

THE DEVANAGARI LINOTYPE
may also be used for the composition of any modern language in Roman and other scripts, including Arabic

Keyboard Operation

DEVANAGARI LINOTYPE

For composing Sanskrit, Hindi, Marathi, Gujarati & other vernaculars of India

1933
MERGENTHALER LINOTYPE COMPANY
BROOKLYN, NEW YORK

Devanagari is the name of the script used originally for Sanskrit, the classical language of the Aryans in India. Most modern vernaculars of India such as Hindi, Marathi, Gujarati and Bengali, are derived from Sanskrit, in much the same way that French, Italian, Spanish, etc., are derived from Latin. These vernaculars are written either in Devanagari or a script based on or derived from it.

Devanagari is known also as Sanskrit script and, like the language, is very systematic. It is based on phonetic principles, and in pronouncing it every letter of a word must be sounded. There are no definite rules for dividing words. The written and the printed characters are very nearly alike. There are no capitals, small capitals, lower case, or italics in Devanagari. The punctuation generally used consists of a half-pause (।) and a full pause (॥). But most of the common English punctuation marks are frequently employed in modern printing.

The Devanagari alphabet has 49 characters, consisting of 16 vowels and 33 consonants. Modern vernaculars of India usually require about a dozen additional characters and sometimes omit a few which are gradually disappearing from usage. But substantially the original alphabet remains as the standard throughout India. The Devanagari characters are divided into three groups, as follows:

VOWELS

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

CONSONANTS

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त
थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह

NUMERALS AND MONETARY SIGNS

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ० । – = ≡)

LINOTYPE DEVANAGARI

Keyboard Diagram No. 154, Main and Auxiliary Magazines

SANSKRIT, HINDI, MARATHI, GUJARATI, AND OTHER INDIAN VERNACULARS

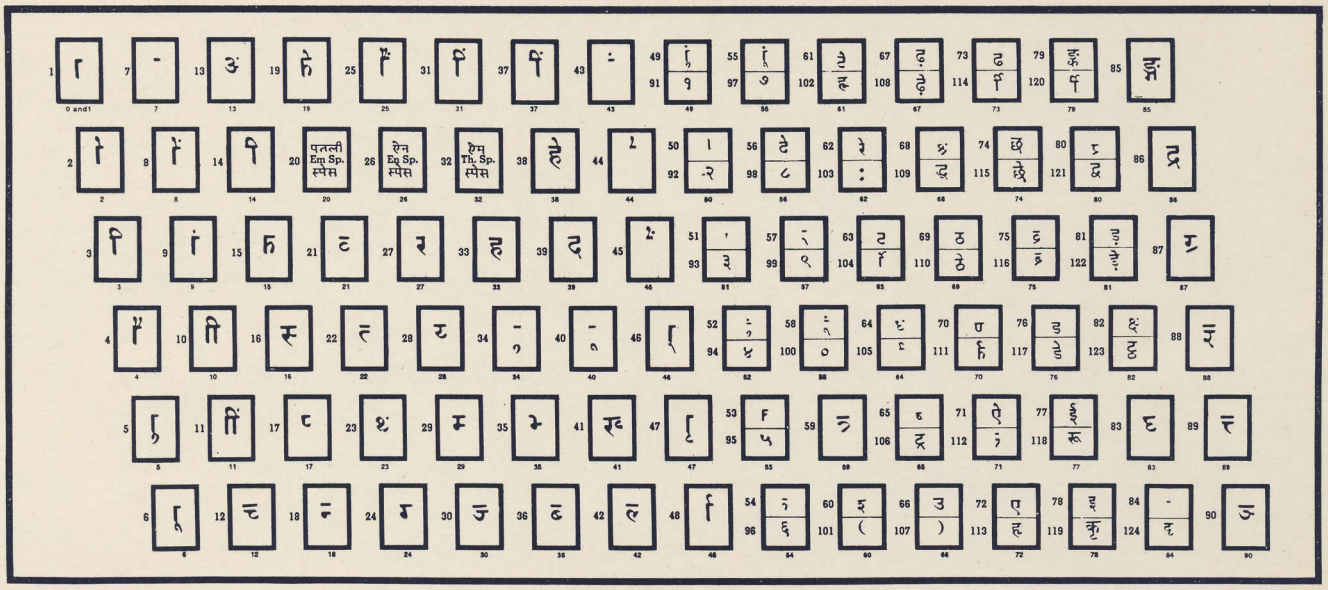

PI CHARACTERS

MERGENTHALER LINOTYPE COMPANY
Brooklyn, New York, U. S. A.

July, 1933

Where two different characters are shown on the same key in this diagram, the upper runs in the main magazine, and the lower in the auxiliary magazine. Both are controlled by the one key.

Some of the sounds found in modern vernaculars and others, borrowed from the Arabic and Persian, are represented by the addition of a dot to certain letters, *e.g.*,

क़ फ़ ख़ ग़ ज़ ड़ ढ़

When vowels are added to consonants the vowels assume an abbreviated form which is placed before or after, above or below, the consonantal characters, thus:

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
ा ि ी ु ू ृ ॄ े ै ो ौ ं ः
क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः
ख खा खि खी खु खू खृ खे खै खो खौ खं खः
च चा चि ची चु चू चृ चे चै चो चौ चं चः
ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ टं टः
त ता ति ती तु तू तृ ते तै तो तौ तं तः
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ह हा हि ही हु हू हृ हे है हो हौ हं हः
हं हां हिं हीं हुं हूं हृं हें हैं हों हौं
मं मां मिं मीं मुं मूं मृं में मैं मों मौं
र्द र्दा र्दि र्दी र्दु र्दू र्दे र्दै र्दो र्दौ र्दं
र्ग र्गा र्गि र्गी र्गु र्गू र्गे र्गै र्गो र्गौ र्गं
द्य द्या द्यि द्यी द्यु द्यू द्ये द्यै द्यो द्यौ द्यं द्यः
प्र प्रा प्रि प्री प्रु प्रू प्रे प्रै प्रो प्रौ प्रं प्रः
ष्ट ष्टा ष्टि ष्टी ष्टु ष्टू ष्टे ष्टै ष्टो ष्टौ ष्टं ष्टः
क्त क्ता क्ति क्ती क्तु क्तू क्ते क्तै क्तो क्तौ क्तं क्तः

The short vowel (अ) is inherent in all the consonants. In order to represent a consonant without a vowel a symbol (्), called *virama*, is placed under or just in front of the consonantal character to indicate the absence of the inherent vowel (अ), *e.g.*,

क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न्

In the hand composition of Devanagari for printing from 700 to 1000 characters are employed. The Devanagari Linotype produces all classes of composition, vernacular or classic, from a keyboard of 90 keys. An auxiliary magazine containing 34 characters, operated from the same keyboard by the use of a shift key, contains numerals and other characters of infrequent usage.

It will be found that in Sanskrit there are a few special characters that are rarely used, as well as symbols of minor importance, for which no provision has been made in the Linotype keyboard. Matrices of these characters are included in the standard fount and carried as side sorts.

The following chart shows the character layout of the Devanagari Linotype keyboard:

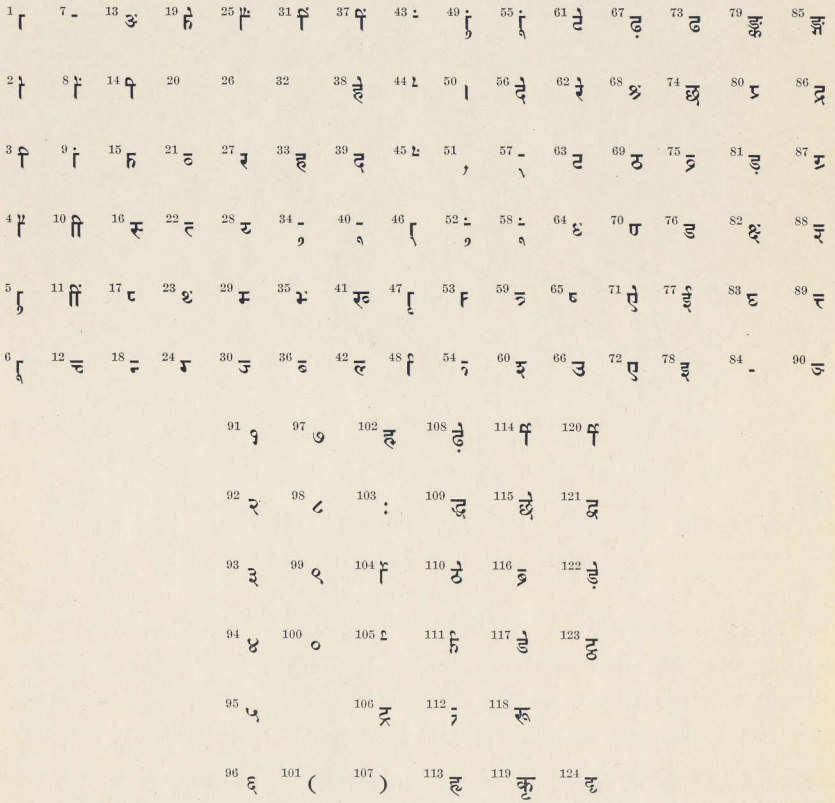

The following is a list of the special characters previously referred to which are carried as side sorts and inserted in the line by hand as the occasion demands:

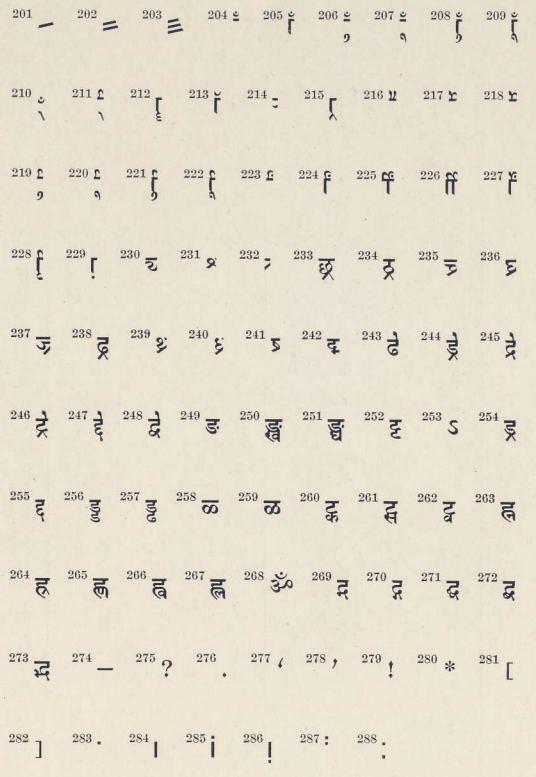

In the following group is shown a list of the sectional Linotype characters which are used in combination with one another to form all the simple and compound letter forms of the Devanagari alphabet. In illustrating the method of combining the various sectional characters, attention is directed to the fact that only a few typical examples are indicated. The operator, who should be well acquainted with the Devanagari alphabet and the vernacular or

language in which he is going to compose type, will find that all the various combinations and conjunct consonants can be built up on the Linotype from characters provided on the keyboard, and an occasional matrix from side sorts.

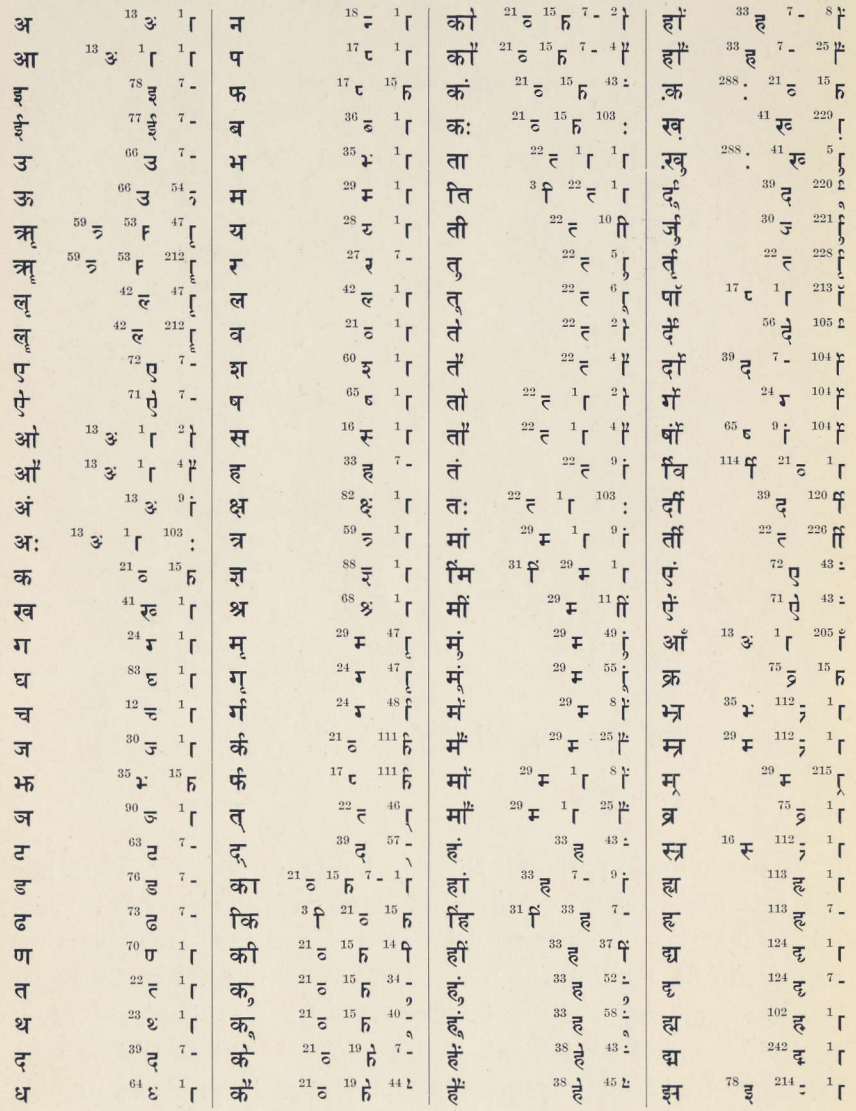

Below is illustrated word forms built up with Linotype sectional characters:

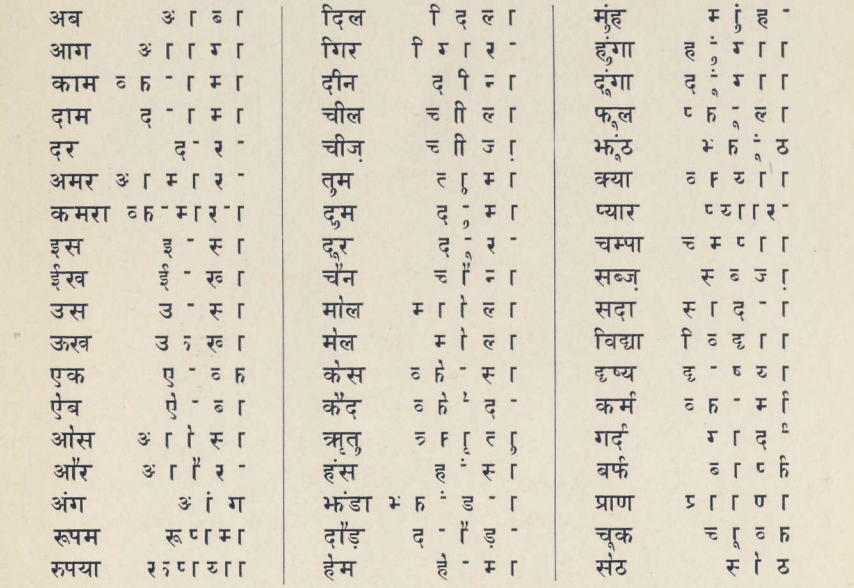

The principal conjunct consonants composed on the Linotype are shown below:

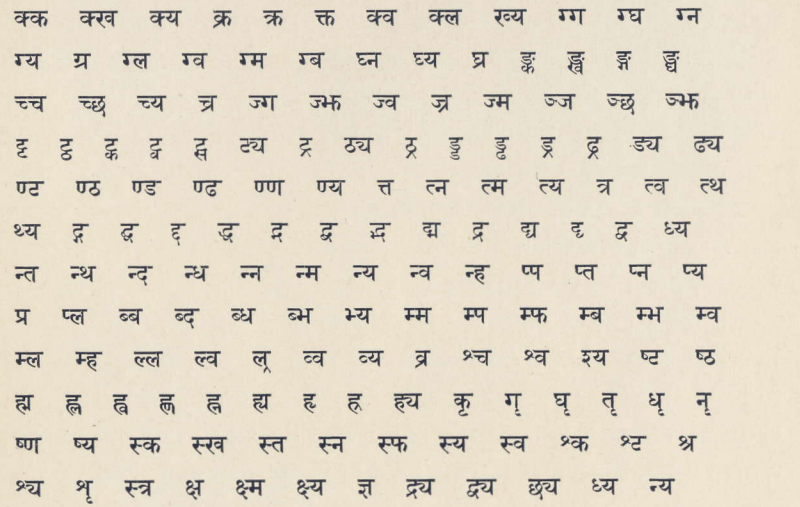

Z
251
.D4
K49
1993

१२ पॉइण्ट लाइनोटाइप देवनागरी के एक पेज का नमूना।

भाषाविज्ञान आदि विद्याओं से इस बात का निर्णय हो चुका हैं कि इस पृथ्वी पर जितनी सभ्य जातियां पायी जाती हैं उनमें बहुत सी एक ही जाति से निकली हैं। ईरानी, यूनानी, रोमन, जर्मन तथा रूस आदि सब जातियां इनके अन्तर्गत हैं। आर्यजाति से निकली हुई जातियों की भाषाओं में एक विशेष प्रकार की समानता पायी जाती हैं। शब्दों के रूप का आदि स्थान एक ही हैं, विशेष प्रयोग के समस्त शब्द और संख्या के शब्द भी एक से ही हैं। इनके अतिरिक्त उन भाषाओं के व्याकरण की रचना भी एक सी ही हैं। कर्त्ता, कर्म, क्रिया, विभक्तियां आदि सब में पायी जाती हैं। एक वचन, द्विवचन और बहुवचन, संस्कृत, लातीनी और यूनानी में प्राय: एक समान पाये जाते हैं। यह क्यों? इसलिये कि इन भाषाओं का आदि स्थान एक ही हैं। यदि ये भाषाएं एक दूसरी के प्रभाव के बिना बनी होतीं तो इतनी समानता कैसे हो सकती थी? चीनी और ब्राह्मी भाषाओं में किसी प्रकार का व्याकरण नहीं पाया जाता।

इससे प्रकट होता हैं कि एक काल था जब कि इन समस्त जातियों के पूर्वज एक ही स्थान पर रहते और एक ही भाषा बोलते थे। उसी स्थान पर मानवसृष्टि का आरम्भ हुआ। काल व्यतीत होने पर जब लोक-संख्या बढ़नी आरम्भ हुई तो इस जाति की शाखाएं निकल निकल कर भिन्न भिन्न दिशाओं की ओर चली गयीं और आगे बढ़कर जहां स्थान उत्तम देखा वहीं निवास करने लगीं।

जलवायु के परिवर्तन से भाषा के शब्दोच्चारण में भी अन्तर होता गया। यह आरम्भिक उत्पत्ति का स्थान कहां था? इस पर कई भिन्न भिन्न मत हैं। एक मत तो यह हैं कि मध्य-एशिया के मैदानों में ही मनुष्य का प्रथम निवास था। दूसरा मत यह हैं कि पहले त्रिविष्टप (तिब्बत) में ही मनुष्य की उत्पत्ति हुई। यह सिद्धान्त आर्यसमाज का हैं। हमारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं कि वह स्थान कहां था। हमारा काम केवल यह बताना हैं कि आर्यजाति की शाखाएं एक ही स्थान से निकली हैं। इसी प्रकार भाषा के सम्बन्ध में भी यह निश्चय नहीं किया जा सकता कि वह कौन सी भाषा थी जिसे आर्यजाति के पूर्वज लोग बोला करते थे। केवल इतना ही ज्ञात हो सका हैं कि वह मूल भाषा वैदिक भाषा के साथ सब से अधिक मिलती थी।

सब प्रकार के ज्ञान का भण्डार भाषा ही हैं। पहले भाषा बनती हैं, उसके उपरान्त उसमें ज्ञान का आरम्भ होता हैं। ज्ञान के धीरे धीरे बढ़ने से सभ्यता का आरम्भ होता हैं। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जब आर्यजाति की शाखाएं विलग होनी आरम्भ हुईं तो उस समय सभ्यता का आरम्भ हो चुका था। संख्यावाचक शब्द प्रयुक्त होने लगे थे। ईश्वर का विचार भी उन्नत हो चुका था क्योंकि भिन्न भिन्न आर्यजातियों में ईश्वर के लिये जो शब्द हैं वे 'दिव' धातु से निकले शब्द "Deity, divine" यूनानी Theos आदि इस बात के साक्षी हैं। कन्या के लिये, आंग्ल शब्द Daughter, फ़ारसी दुख़्तर और संस्कृत दुहितृ में कैसी समानता पायी जाती हैं? कृषि की रीति भी प्रारम्भ हो चुकी थी और ये लोग गाँओं

Specimen page of 12 point Linotype Devanagari, leaded two points

September, 1933. 610.12
PRINTED IN U.S.A.